भजन

तर्ज–ये माना मेरी जां

तौबा तौबा इश्क वाले,इश्क वालों का ये हाल
खेल मे आके इन्हे,पछताना ही पड़ा
रोका था ना जाओ,ना जाओ मगर
जिद मे ऐसी अड़ी,कि तुम्हे लाना ही पड़ा

इश्क रब्द की धूम मचा दी,
न चाहते हुए भी लाना ही पड़ा है
हमारी ये मांगें पूरी करो जी,जो
दुख तुमने मांगा दिखाना पड़ा है

1–बहलना ना चाहो, बदलना ना चाहो
तुम तो मचल के, संभलना ना चाहो
चाहत तुमारी ये क्या रंग लाई
तुम्हे क्या हमे दुख तो उठाना पड़ा है

2–श्यामा जी ने भी दिया साथ तुम्हारा
जुदा हमको जाना,समझा के हारा
तुम अंग मेरे,तुम्हारी ही खातिर
चरकीन में संग आना पड़ा है

3–तुमने तो अपना घर है बसाया
हमने बसे हुए घर को जलाया
जेल काटी, फांसी भी सुनाई
पत्नी छोड़ी वो अपनी फूलबाई
अर्श में तुमने क्या क्या न कहा मुझको
लाड मे ए की आवाज लगाई
इश्क न समझा साहेबी न जानी
चुनौती दी ऐसी,आजमाना पड़ा है
4–करीब ना आते,घर की रट लगाते
आशिक कहाते ना आशिकी निभाते
इश्क दिखाओ, नजर तो मिलाओ
मैं तो यहां हूँ घर क्या पड़ा है
5–तुमारी खातिर घूम रहा हूं
दिन रात तुमको ही ढूंढ रहा हूं
अब आ भी जाओ, अब ना सताओ
चलो अब चलें मैं तो कब से खड़ा हूं
6–तुमको तो अपने कबीले ये झूठे
लगते है ज्यादा हमसे भी मीठे
पंद्रह दिनों से पांच अब किये है
जा जा के हमको फिर भी बुलाना पड़ा है